UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654
वर्ष : 12, अंक : 1, जनवरी 2024

आकाशवाणी उदयपुर स्टेशन का भारतीय संगीत में योगदान

किरण डाँगी
शोधार्थी, संगीत विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

सार-संक्षेप

प्रस्तुत लेख में शोध समस्या के अंतर्गत वर्तमान में भारतीय संगीत में उदयपुर आकाशवाणी रेडियो का किस प्रकार योगदान है उसको दिखाया गया है। मानव समुदाय की भावनाओं एवं आंतरिक संवेदनाओं की अभिव्यक्ति करने का प्रमुख अंग ही संगीत रहा है। आकाशवाणी का उद्देश्य यही रहा है कि आकाशवाणी के कार्यक्रम को अधिकाधिक श्रोता सुने और उससे लाभान्वित हो। आकाशवाणी से प्रसारित भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों के अपने रूचि के अनुसार श्रोता बन जाते हैं। आकाशवाणी केंद्र ने नानाविध कार्यक्रमों से भरपूर ज्ञान-विज्ञान, खेल-कूद और मनोरंजन के सभी पक्षों को उद्घाटित करने का महत्त्वपूर्ण प्रयास किया है जिसमें संगीत का विशेष योगदान रहा है। वर्तमान में जो एफ.एम. चैनल चल रहे हैं उन पर लगभग 70 प्रतिशत संगीत के कार्यक्रमों का ही प्रसारण किया जाता है। जनसंचार माध्यमों (रेडियो, टीवी) आदि का भारतीय संगीत के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आकाशवाणी के संदर्भ में बात करे तो भारत में सबसे बड़ा सांगीतिक मंच और व्याख्यान का मंदिर ही आकाशवाणी है। संगीत और संगीतज्ञों को देश-विदेश के कोने-कोने तक पहुँचाने में एक सशक्त माध्यम के रूप में आकाशवाणी ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने एवं जन समुदाय तक पहुँचाने में आकाशवाणी की विशेष भूमिका रही है। इस प्रकार आकाशवाणी ने भारतीय संगीत परंपरा को अक्षुण्ण तथा समृद्ध बनाए रखने में बहुत सहायता की। प्रस्तुत लेख में विश्लेषणात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। निष्कर्षतः आकाशवाणी रेडियो, संगीत के विकास में एक सरल, सहज रूप से एक नवीन माध्यम के रूप में प्रमुख योगदान दे रहा है। वर्तमान में आकाशवाणी केंद्रों को भारतीय संगीत कार्यक्रमों को लेकर सजग रहने की आवश्यकता है अधिकाधिक संगीत का प्रसारण करके, लोगों को संगीत के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया जाना चाहिए जिससे भारतीय संगीत की जीवन्तता को बरकरार रखा जा सके।

मुख्य शब्द : आकाशवाणी, संगीत, रेडियो, सुगम संगीत, लोक संगीत।

शोध-पत्र

जनसंचार का सबसे पहला माध्यम ही संगीत है भारतीय संगीत परंपरा में अनेकता में एकता दिखलायी पड़ती है। शास्त्रीय सांगीतिक क्षेत्र के प्रचार-प्रसार के माध्यमों का आज की कठिन परिस्थितियों में विशेष योगदान रहा है। संगीत एक श्रव्य कला होने से, अपने विकास हेतु किसी न किसी माध्यम पर निर्भर रहता है, जैसे–रेडियो, टी.वी., टेलीवीजन संगीत सम्मलेन आदि। संगीत का श्रव्य कला होने के कारण रेडियो और आकाशवाणी से अधिक संबंध रहा है।

आकाशवाणी–भारतीय धर्म शास्त्रों में ऐसी वाणी जो आकाश से देवताओं द्वारा प्रसारित 'दिव्य-वाणी' के रूप में रूपायित हुई है, वह 'आकाशवाणी' कहलायी है। आकाशवाणी का प्रतीक चिन्ह है–'बहुजन हिताय, बहुजन-सुखाय' अर्थात् अधिकतम लोगों का भला हो, अधिकतम लोग सुखी हो, भारत का लोक सेवा प्रचारक आकाशवाणी, भारत में सबसे बड़ा सांगीतिक मंच और व्याख्यान का मंदिर है।

आधुनिकता के संदर्भ में आकाशवाणी का अर्थ-उल्लास, मनोरंजन, रूचि और प्रसन्नता की उत्पत्ति है। संपूर्ण भारत में आकाशवाणी का प्रथम केंद्र जिसका उद्घाटन 23 जुलाई, 1927 को बम्बई (महाराष्ट्र) से हुआ। आकाशवाणी की स्थिति को दो भागों में विभाजित करके देखा जा सकता है। प्रथम स्वतंत्रता से पूर्व भारत में आकाशवाणी की स्थिति, दूसरा स्वतंत्रता के पश्चात् आकाशवाणी का विस्तार। स्वतंत्रता के समय भारत में कुल 2, 75, 000 रेडियो सेट्स थे परंतु आधुनिक समय में रेडियो सेट्स हर घर में उपलब्ध है और इनकी संख्या बढ़ती ही जा रही है। स्वतंत्रता के बाद आकाशवाणी का तेजी से विस्तार हुआ, जिससे संगीत प्रसारण घर-घर संभव हो पाया। आकाशवाणी प्रसारण में संगीत का विशिष्ट योगदान रहा है क्योंकि संगीत एक श्रव्य विधा है जो ध्वनि में निहित है, संगीत और संगीतज्ञों को देश के कोने-कोने तक पहुँचाने में आकाशवाणी ने एक सशक्त माध्यम के रूप में अपनी अहम् भूमिका निभायी है। वर्तमान में आकाशवाणी की सहायता से संगीत प्रत्येक घर तक पहुँच गया है। जहाँ ''आकाशवाणी का प्रत्येक केंद्र अपने क्षेत्र के लोक संगीत की रिकॉर्डिंग नियमित रूप से करता है जिसमे स्थानीय कलाकारों को भी प्रोत्साहन तथा संरक्षण मिलता है।'' (यमन 123)

आकाशवाणी ने शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने एवं जन-जन तक पहुँचाने में विशेष भूमिका निभायी है। आकाशवाणी के सभी केंद्रों पर श्रोताओं के समक्ष शास्त्रीय, सुगम, लोक-संगीत सम्मेलनों का आयोजन होता रहता है साथ ही आकाशवाणी द्वारा, सांगीतिक सम्मेलनों का प्रसारण, भारत के विभिन्न स्थानों पर होता है।

आकाशवाणी का ध्येय रहा है कि जनमानस को शिक्षा, सुचना, मनोरंजन प्रदान किए जाएँ साथ ही समाज व राष्ट्र को नई दिशाएँ दी जाएँ जिसके परिणाम स्वरूप 8 जुलाई, 1950 को बम्बई में 'सुगम संगीत एकांश' का गठन हुआ, तथा ''संगीत का पहला अखिल भारतीय कार्यक्रम 20 जुलाई, 1952 को प्रसारित हुआ साथ ही अक्टुबर में 'आकाशवाणी वाद्यवृन्द' का गठन हुआ।'' (श्रीमाली 08) भारत की 99.19 प्रतिशत आबादी तक 'ऑल इंडिया रेडियो' की पहुँच है। वर्तमान में भारत में आकाशवाणी के लगभग 479 से अधिक प्रसारण केंद्र तथा 400 के आसपास ट्रांसमीटर है साथ ही 23 भाषाओं में ये प्रसारित होता है।

''सांकृतिक दृष्टि से देश में एकता स्थापित करने के उद्देश्य से 1 जनवरी, 1973 से 'क्षेत्रीय और लोक संगीत' का 'अखिल भारतीय कार्यक्रम' प्रसारण होना शुरू हुआ।'' (श्रीमाली 13) तथा ''आकाशवाणी केंद्रों से नाटक एवं रूपक संगीत आदि के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुतिकरणों के लिए आकाशवाणी वार्षिक पुरुस्कार 1974 से दिये जाने प्रारंभ किये हैं।''(श्रीमाली 24) आकाशवाणी केंद्र, अन्य केंद्रों से तथा अन्य क्षेत्रों से भी कलाकारों को आमंत्रित करते हैं साथ ही एक केंद्र पर की गयी संगीत की रिकॉर्डिंग अन्य केंद्रों को भी भेजी और मँगवायी जाती है, ताकि प्रत्येक क्षेत्रों में राष्ट्रीय एकता को बरकरार रखते हुए संगीत का प्रसारण दूसरे क्षेत्रों में भी किया जा सके। आकाशवाणी वर्ष में एक बार 'आकाशवाणी संगीत समारोह' आयोजित करता है। प्रातः 6.00 बजे से रात्रि के 12 बजे तक लगातार 17 घंटे मनोरंजन के रूप में विभिन्न संगीतमय आवाजें आकाशवाणी द्वारा सुनी जा सकती है। आकाशवाणी ने दुर्गम्य स्थानों और छोटे-छोटे समुदायों, जहाँ समारोहों में भाग लेने वाले कलाकार कभी नहीं जा सकते, ऐसे दूर-दूर स्थानों तक संगीत को पहुँचा दिया है। आज आकाशवाणी संगीत के लिए एक सर्वाधिक प्रिय माध्यम बन गया है जिससे आकाशवाणी द्वारा सभी प्रकार का संगीत, सर्वजन के लिए सुलभ हो गया।

वर्तमान में अंग्रेजी में ''यहाँ 'ऑल इंडिया रेडियो' और भारतीय भाषाओं में 'आकाशवाणी' शब्द का व्यवहार होता है।'' (शुचिस्मिता 44) आकाशवाणी के केंद्रों द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों में लगभग 40 प्रतिशत स्थान संगीत को दिया गया है। आकाशवाणी द्वारा साप्ताहिक संगीत के मंगलवारिय, शनिवारिय अखिल भारतीय कार्यक्रम, वार्षिक आकाशवाणी संगीत सम्मेलन, वीरवार आदि के अलावा भी संगीत सभाएँ तैयार की जाती है। ''मंगलवार की संगीत सभा में उत्तर भारतीय तथा शुक्रवार की सभा में कर्नाटक संगीत के युवा एवं प्रतिभाशाली कलाकारों के कार्यक्रमों को प्रसारित किया जाता है। संगीत से जो बिलकुल अपरिचित है उनको भी संगीत का प्रारंभिक ज्ञान-लाभ आकाशवाणी के विभिन्न कार्यक्रमों से मिलता है।'' (शुचिस्मिता 81) इसी प्रकार आकाशवाणी द्वारा संगीत स्पर्धा भी आयोजित की गई, ये वर्ष 1954-55 में 'रेडियो माह' के उपलक्ष्य में नवोदित कलाकारों को प्रोत्साहित करने हेतु किया गया। आकाशवाणी केंद्र अपने क्षेत्र के कलाकारों का प्रतियोगिता के लिए चयन करता है तथा उनकी रिकॉर्डिंग अंतिम निर्णय के लिए मुख्य प्रसारण केंद्रों पर भेजता है इन प्रतियोगिताओं में सफल होने वाले प्रतिभागीको 'आकाशवाणी अवॉर्ड' दिए जाते हैं और उन्हें B, B-High, A तथा Top Class श्रेणी का कलाकार भी घोषित किया जाता है। आकाशवाणी द्वारा संगीत के विद्यार्थियों के लिए विशेष कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं। संगीत के दोनों पक्ष (क्रियात्मक व शास्त्रीय) के प्रश्नों व समस्याओं के समाधान, संगीत संबंधी इन कार्यक्रमों में प्रस्तुत किये जाते हैं। आकाशवाणी, युवा वर्ग को संरक्षण देकर शास्त्रीय संगीत की परपंरा को सुदृढ़ बना रहा है।

वर्तमान समय में आकाशवाणी बहुत ही रुचिकर ढंग से शास्त्रीय संगीत का प्रसारण विविध भारती के माध्यम से भी कर रहा है। आकाशवाणी से संबंधित सभी कलाकारों को सामाजिक एवं मानसिक तथा आर्थिक संरक्षण प्राप्त हुआ है परिणाम स्वरूप संगीत को सम्मान जनक स्थान भी मिला है।

रेडियो द्वारा संपूर्ण विश्व की सूचना, ज्ञान-विज्ञान, कला, संगीत आदि को जनसाधारण के लिए बड़ी सरलता से उपलब्ध कराया गया है। आधुनिक युग प्रौद्योगिकी का युग है इस युग में बदलती तकनीक के साथ रेडियो तकनीक के स्वरूप में काफी परिवर्तन हुआ है आज रेडियो के कई प्रकार हो चुके है जैसे–हैम रेडियो, ए.एम.रेडियो, एफ. एम.रेडियो, सामुदायिक रेडियो, सैटेलाइट रेडियो, डिजिटल रेडियो, स्काई रेडियो, इंटरनेट रेडियो, वेब रडियो, ब्रांडबैंड रेडियो, विजुअल-रेडियो, कम्युनिटी-रेडियो, कैंपस रेडियो, शैक्षणिक रेडियो आदि। रेडियो प्रसारण ने न केवल तेजी से बड़ी संख्या में लोगों तक संगीत का प्रसार किया, बल्कि लाइव संगीत को पुरे संयुक्त राज्य में उसी समय सुनने की अनुमति दी जब इसे कॉन्सर्ट हॉल या अन्य स्थल पर सुना गया था। संगीत के कार्यक्रम रेडियो पर स्वतंत्र रूप से प्रसारित होते हैं साथ ही संगीत का विभिन्न रेडियो कार्यक्रमों में सिग्नेचर टयून या थीम म्यूजिक के रूप में भी उपयोग होता है।

रेडियो कार्यक्रम में संगीत का महत्त्व कुछ इस प्रकार है, जैसे–संगीत को विज्ञापन, पॉडकास्ट या शो सामग्री के साथ जोड़ना आदि। संगीत श्रोताओं और सामग्री के बीच सकारात्मक संबंध बना सकता है, बिक्री बढ़ा सकता है। संगीत किसी भी, केवल शब्द या ध्वनि पर निर्भर कार्यक्रम में, रंग वैविध्य तथा जीवन्तता का समावेश करता है तथा एकरसता नहीं आने देता है, रेडियो की महत्ता को उच्चकोटि के संगीतज्ञ भी स्वीकार चुके हैं। ''जन साधारण में सांगीतिक जागृति होने के उद्देश्य से आकाशवाणी का 'रेडियो संगीत सम्मेलन' का आयोजन एक उत्तम प्रयास है।''(तावसे 14) रेडियो संगीत के लिए वरदान साबित हो रहा

है। रेडियो अखिल भारतीय संगीत का राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन करता रहा है। दैनिक प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में ''शास्त्रीय संगीत पर आधारित कार्यक्रम 'संगीत सरिता' का प्रसारण होता है जिसमें किसी भी एक राग की संपूर्ण जानकारी दी जाती है।''(तावसे 15) स्थानीय वरिष्ठ कलाकारों और उच्चस्तरीय कलाकारों का गायन-वादन होता है। ''अनुरंजनी नामक शास्त्रीय कार्यक्रम का प्रसारण विविध भारती द्वारा किया जाता है।''(तावसे 15) ''हिन्दुस्तानी और कर्नाटक शैलियों के प्रतिभाशाली कलाकारों का दिल्ली से संगीत प्रसारण का 'अखिल भारतीय कार्यक्रम' प्रसारित होता है जिसे आकाशवाणी के अन्य केंद्र रिले करते हैं।''(श्रीमाली 27) आकाशवाणी के संगीत प्रसारण में पश्चिमी संगीत भी अनेक देशों के लिए प्रसारित किया जाता है।

''भारत में रेडियो से पहला प्रसारण अगस्त 1921 में संगीत के कार्यक्रम के रूप में हुआ था।'' (श्रीवास्तव 44) भारत में रेडियो प्रसारण की शुरूआत हुए पच्चानवे वर्ष से अधिक का समय हो गया है। 1936 में इसका नाम ऑल इंडिया रेडियो रखा गया तथा 1957 में आकाशवाणी भी कहा जाने लगा। 1954 में पहला 'रेडियो संगीत सम्मेलन' आयोजित किया गया था। रेडियो का मुख्य आकर्षण संगीत प्रसारण है तथा संगीत को ही अधिकांश समय दिया जाता है। रेडियो की आत्मा संगीत है और संगीत मनुष्य के सभी कष्ट, विकार एवं मानसिक संकीर्णताओं को दूर करके मोक्ष प्रदान करने का कार्य करता है। रेडियो ने संगीत जैसी पवित्र धार्मिक निधि को समाज में पहुँचाने में विशेष भूमिका अदा की है।

रेडियो ने समाज में जैसे-जैसे विकास किया वैसे-वैसे संगीत का विकास भी होता गया। रेडियो का समाज में संगीत को पहुँचाने और पहचान दिलाने में अद्वितीय योगदान रहा है, साथ ही संगीत का भी रेडियो को समाज में पहचान दिलाने और लोकप्रिय बनाने में विशेष योगदान रहा है। रेडियो के अभाव में संगीत और संगीत के अभाव में रेडियो का उचित विकास और व्यवहार नहीं हो सकता है ये एक ही सिक्के के दो पहलू है। संगीत को प्रसारण में इस प्रकार विभाजित किया गया है-

1. शास्त्रीय संगीत–आकाशवाणी से 30.15 प्रतिशत शास्त्रीय संगीत प्रसारित होता है जो कि संगीत के कार्यक्रमों में सबसे अधिक सुना जाता है। शास्त्रीय संगीत राष्ट्रीय, प्रादेशिक, स्थानीय स्तर, थ्री टियर सिस्टम पर प्रसारण किया जाता है। शास्त्रीय संगीत के कलाकारों की एक गौरवपूर्ण परंपरा रही है इनकी स्मृति में आकाशवाणी विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करता है, इन कार्यक्रमों का आकाशवाणी द्वारा सीधा प्रसारण होता है। उदयपुर के शास्त्रीय संगीत गायन के कलाकारों में डागर बंधु (ध्रुपद गायक) प्रसिद्ध है जिनकी आकाशवाणी रेडियो से रिकॉर्डिंग प्रसारित होती रहती है।

रेडियो द्वारा लोकतंत्र में शास्त्रीय संगीत को और अधिक मान-सम्मान व अनुकूल वातावरण मिला। शास्त्रीय संगीत के अखिल भारतीय कार्यक्रम साप्ताहिक रूप से एक-डेढ़ घंटे के लिए प्रसारित होते हैं। संपूर्ण भारत में आकाशवाणी रेडियो द्वारा रविवारिय, सोमवारिय, मंगलवारिय संगीत सभा रात्रि में 10-11 बजे के बीच एक-एक घंटे के लिए प्रसारित हो रही है। प्रसार भारती निगम आकाशवाणी उदयपुर से वर्तमान में शनिवार, रविवार रात्रि 10-11 बजे, 1 घंटे के लिए शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं। शास्त्रीय संगीत अनिवार्य रूप से आकाशवाणी के सभी केंद्रों से प्रत्येक सभा में कुछ समय के लिए प्रसारित होता है। रात्रि में भी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम प्रसारित होते रहते हैं। संगीत प्रकोष्ठ की सर्वोच्च सम्मानित, शास्त्रीय संगीत विधा मानी जाती है। शास्त्रीय संगीत ही उप-शास्त्रीय संगीत का आधार होता है।

2. उप-शास्त्रीय संगीत–आकाशवाणी द्वारा संगीत को दोनों विधाओं (गायन एवं वादन) में प्रसारित किया जाता है, वादन के समय शास्त्रीय आधार पर उप-शास्त्रीय संगीत के राग बजायें जा सकते हैं। उप-शास्त्रीय संगीत को शास्त्रीय संगीत से आंशिक सरल रूप माना जाता है, इसमें ठुमरी, दादरा, टप्पा, छोटा ख्याल, भैरवी आदि आते हैं।

3. सुगम संगीत–सुगम संगीत, आकाशवाणी से प्रसारित संगीत की सभी विधाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है। ऐसे आयोजनों के प्रति श्रोताओं में काफी रूचि देखी जाती है। सुगम संगीत के अंतर्गत वृंदगान, देशभक्ति गीत, मातृ-वंदना, भक्ति संगीत प्रसारित किये जाते हैं। इसको दो वर्गों में विभाजित किया गया है–

1. **भजन व गीत**–संगीत का एक महत्त्वपूर्ण भाग है–धार्मिक कार्यक्रम। जिसके अंतर्गत भजन आदि को आकाशवाणी समय-समय पर श्रोताओं के समक्ष लाने का प्रयास करता रहा है।

   गीत–सदाबहार गीतों और भजनों को श्रोता बहुत पसंद करते हैं तथा कई सारे श्रोताओं को गीत एवं भजन बहुत प्रिय होते हैं, परिणामस्वरूप रेडियो समय-समय पर इन्हें भी प्रसारित करता रहता है।

2. **ग़ज़ल व कव्वाली**–ग़ज़लें, सुगम संगीत के अंतर्गत आती है इसका मतलब है- प्रेम पत्र से बातचीत करना। उदयपुर आकाशवाणी के प्रसिद्ध ग़ज़ल गायक (ए ग्रेड आर्टिस्ट) डॉ. प्रेम भण्डारी की रिकॉर्डिंग्स तथा देवेन्द्रसिंह हिरण आदि की रिकॉर्डिंग आकाशवाणी श्रोताओं को सुनाता रहा है तथा श्रोता इनको विशेष रूचि के साथ सुनते हैं।

कव्वाली–''ईश्वर आराधना का एक रूप है कव्वाली प्रस्तुत करना'' (श्रीमाली 122) उदयपुर के (ए ग्रेड आर्टिस्ट) हसलम साफरी बंधु के कव्वाली गायन की आवाज भी आकाशवाणी ने श्रोताओं तक पहुँचायी है ये कार्यक्रम श्रोताओं द्वारा अत्यंत रूचि से सुना जाता है।

4. लोक संगीत–परंपरा से चला आ रहा आंचलिक संगीत, अपना लोक संगीत होता है। ''लोक संगीत में हमारी सभी मनोदशाओं को बहुत बारीक किन्तु करीने से पिरोया हुआ है।'' (श्रीमाली 119)लोक संगीत को कई-कई रातों तक लगातार समूह में गाते रहने पर भी खजाना खाली नहीं होता। लोक संगीत को आकाशवाणी ने पर्याप्त स्थान दिया, सरंक्षण प्रदान किया एवं मान-सम्मान दिया। प्रत्येक सभा में प्रत्येक केंद्र में कुछ समय के लिए लोक संगीत को अवश्य प्रसारित किया जाता है।

आकाशवाणी केंद्र अपने आंचल के लोक संगीत प्रसारित करता है तथा आमंत्रित श्रोताओं के समक्ष शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में लोक संगीत सभाएँ अत्यंत सफल साबित होती है। अपार जन इन कार्यक्रमों को देखने के लिए उमड़ पड़ता है। इस प्रकार 1967 की शुरूआत में ही आकाशवाणी के नये केंद्रों की स्थापना होने लगी जिसमें राजस्थान के अंतर्गत उदयपुर नगर में सातवें दशक में आकाशवाणी केंद्र की स्थापना हुई अर्थात् 5 मार्च को उदयपुर में आकाशवाणी केंद्र की स्थापना हुई। उदयपुर नगर के लोक गीतों में मांड, सोरठ, ढोला मरवण, पिणीहारी, मूमल, कुरजां, लालर, माछर, घुमर, गणगौर एवं सावणी तीज आदि आकाशवाणी द्वारा प्रसारित किये जाते हैं। इसमें पारंपरिक लोक संगीत भी सम्मिलित है जिसमें लोक भजन गायन, लोकगीत, लोक भजनों की धुनें लोकगीतों की धुनें आदि वाद्य संगीत पर प्रसारित होती है। उदयपुर क्षेत्र की लोक गायिकाओं में प्रसिद्ध मांड गायिका माँगी बाई (ए ग्रेड आर्टिस्ट) प्रमुख है। लोक एवं शास्त्रीय गायिका सरस्वती देवी धान्धड़ा एवं अन्य गायिकाओं के आकाशवाणी द्वारा मधुर स्वर श्रोताओं को सुनायी पड़ते हैं इसके साथ ही उदयपुर की अन्य कलाकार फत्ती बाई, वरदी बाई, रेखा सोनार्थी, जानकी देवी, मोहिनी देवी पड़िहार आदि गायिकाओं की रिकॉर्डिंग आकाशवाणी द्वारा समय-समय पर प्रसारित होती रहती है, जिसे सुनकर श्रोता भाव-विभोर हो जाते हैं।

एकल वादन परंपरा के अंतर्गत स्वतंत्र वादन को भी प्रसारित किया जाता है। उदयपुर में आकाशवाणी के वादन क्षेत्र में, सारंगी वादन के प्रसिद्ध कलाकार पं. रामनारायण जी रहे हैं, वर्तमान में सारंगी के विजय कुमार धान्धड़ा (ए ग्रेड आर्टिस्ट) है जिनकी आकाशवाणी से सारंगी वादन की रिकॉर्डिंग प्रसारित होती रहती है इसी प्रकार क्लोनेट वादकों में मीठालाल वर्मा (ए ग्रेड आर्टिस्ट) मुख्य है तथा तबला वादन में पं. चतुरलाल जी (टॉप ग्रेड आर्टिस्ट) प्रमुख है।

5. भक्ति संगीत—भक्ति संगीत का उदयपुर (मेवाड़) में विशेष महत्त्व है, भक्ति संगीत, प्राणी मात्र को सुख, संतोष व आत्मानंद प्रदान करता है। विशेषकर उदयपुर क्षेत्र में भक्ति संगीत को आकाशवाणी के श्रोताओं द्वारा सर्वाधिक सुना जाता है, प्रत्येक केंद्र से भक्ति संगीत का नियमित प्रसारण होता है।

6. पाश्चात्य संगीत—वर्तमान में पाश्चात्य संगीत युवाओं की विशेष रूचि का कार्यक्रम है इसलिए युवाओं की रूचि का ख्याल रखते हुए आकाशवाणी पाश्चात्य संगीत को भी समय-समय पर श्रोताओं तक पहुँचाने का काम कर रहा है। पाश्चात्य संगीत की अधिकतर रचनाएँ नृत्य प्रधान संगीत वाली होती है। पाश्चात्य संगीत को विदेशी प्रसारण में बहुतायत में रखा जाता है।

7. चित्रपट संगीत—चित्रपट अर्थात् फिल्म संगीत, जिसमें चित्र या कला के माध्यम से संगीत की गहराई को दर्शाया जाता है मनोरंजन एवं आनंद प्राप्ति के लिए मुख्य रूप से एक चित्रमय संगीत का आयोजन किया जाता है जिसमे दर्शकों को संगीत का भरपूर आनंद मिलता है।

वाद्य वृन्द—विभिन्न वाद्य यंत्रों द्वारा संगीत स्वर रचना (म्यूजिक कम्पोजीशन) को संगीत रचनाकार के निर्देशन में प्रस्तुत करना, वाद्य वृन्द है। इसे भी हर संभव आकाशवाणी द्वारा प्रसारित किया जाता रहा है।

संगीत रूपक—संगीतात्मक रूपक विधा में रेडियो प्रस्तुति किसी एक विषय पर करना संगीत रूपक कहलाता है। ये विधा संगीत प्रेमी के लिए आकाशवाणी की रोचक प्रस्तुति मानी जाती है। इस प्रकार आकाशवाणी ने संगीतज्ञों को आय का एक सतत स्रोत प्रदान किया।

आकाशवाणी प्रसार भारती, उदयपुर के संगीत कार्यक्रम की सारणी इस प्रकार है—''प्रातः 5.55 पर वंदेमातरम् जो कि आरम्भिक उद्घोषणा मंगल ध्वनि है, समय-5 मिनट, 6.05 पर वंदना, भक्ति संगीत प्रसारित होता है समय-40 मिनट, 6.45 पर श्री रामचरित मानस गान, समय-10 मिनट, 8.30 पर फिल्म संगीत, समय-30 मिनट, 9.10 पर लोक संगीत, समय-20 मिनट, 10.00 बजे फिल्म संगीत, समय-1 घंटा, 11.00 बजे लोक संगीत, समय-30 मिनट, 12.40 पर पर फिल्म संगीत, समय-20 मिनट, 1.05 से 2.15 के बीच चार बार राजस्थानी गीत, ये अन्य कार्यक्रमों के बीच-बीच में कुछ देर के लिए प्रसारित किया जाता है। 2.30-3.00 बजे तक अन्य कार्यक्रमों के बीच में 2 बार राजस्थानी गीत सुनाया जाता है।'' (आकाशवाणी उदयपुर) तथा 2 घंटे ब्रेक के पश्चात् पुनः शाम ''4.58 पर संकेत धुन/आरंभिक उद्घोषणा, समय 2 मिनट, 5 बजे युववाणी/प्रत्येक मंगलवार युवाओं द्वारा भिजवाए गए फरमाईशी खतों पर आधारित कार्यक्रम, ये फिल्मी गीतों पर आधारित, साप्ताहिक, युवाओं का पसंदीदा कार्यक्रम है। 6.00 बजे फिल्म संगीत, समय-30 मिनट, 7- 8.00 तक अन्य कार्यक्रम के बीच में कुछ समय के लिए 3 बार राजस्थानी गीत, 8.00 बजे फिल्म संगीत, समय-45 मिनट, 9.15 पर सुगम संगीत, समय-15 मिनट, 9.30 पर फिल्म संगीत, समय-30 मिनट, 10.00 बजे सदाबहार नगमे, समय-1 घंटा, इस प्रकार 11.00 बजे रात्रि तक संगीत के कार्यक्रम आकाशवाणी द्वारा चलते है।'' (आकाशवाणी उदयपुर)

परिणाम स्वरूप संगीत के प्रसारण से लोगों का सांस्कृतिक स्तर समुन्नत हुआ। प्रत्येक भारतीय को अपने देश की सांस्कृतिक धरोहर के विषय में पता चला। अतः आकाशवाणी के संदर्भ में कहा गया है कि ''व्यक्तिगत मौलिकता तो देश के हर हिस्से के लिए उचित है परंतु स्थानीय कलाकारों और संस्कृति की प्रस्तुति करके आकाशवाणी ने एक न नकारी जा सकने वाली एकता का सूत्रपात कर दिया है।'' (शुचिस्मिता 32)

इसी प्रकार रात्रि में शास्त्रीय संगीत संबंधी कार्यक्रम प्रसारित होते हैं जो संगीत के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान देते हैं, इस प्रकार के कार्यक्रम प्रसारित होने से जनता में शास्त्रीय संगीत के प्रति रूचि बढ़ती है। इस प्रकार आकाशवाणी ने भारतीय संगीत परंपरा को अक्षुण्ण बनाए रखने में बहुत सहायता की है। शास्त्रीय संगीत और शास्त्रीय संगीत के कलाकारों को मान-सम्मान व प्रतिष्ठा दिलवाने के साथ ही शास्त्रीय संगीत को प्रगति की ओर अग्रसर करने में आकाशवाणी ने जो भूमिका निभायी है। वह अत्यंत सराहनीय है। इस प्रकार आकाशवाणी रेडियो, संगीत के विकास में एक जनसंचार माध्यम के रूप में प्रमुख रूप से सहायक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

यमन, अशोक कुमार; रेडियो और संगीत, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011
श्रीमाली, इंद्र प्रकाश; आकाशवाणी एवं प्रसारण विधाएँ, हिमांशु पब्लिकेशन, उदयपुर, प्रथम संस्करण 2001
वही
वही
शुचिस्मिता; आकाशवाणी एवं हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत, कनिष्क पब्लिशर्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2006
वही
तावसे, सुवर्णा; शास्त्रीय संगीत में प्रचार-प्रसार के माध्यमों का योगदान, इंदौर, 2015
वही
वही
श्रीमाली, इंद्र प्रकाश; आकाशवाणी एवं प्रसारण विधाएँ, हिमांशु पब्लिकेशन, उदयपुर, प्रथम संस्करण 2001
श्रीवास्तव, रेनू; शिक्षण संस्थाओं में वेब रेडियों, हिमांशु पब्लिकेशन, उदयपुर, प्रथम संस्करण 2018
श्रीमाली, इंद्र प्रकाश; आकाशवाणी एवं प्रसारण विधाएँ, हिमांशु पब्लिकेशन, उदयपुर, प्रथम संस्करण 2001
वही
प्रसार भारती आकाशवाणी, उदयपुर, मंगलवार, दिनांक -20/06/2023, पहली सभा
वही, दूसरी सभा
शुचिस्मिता; आकाशवाणी एवं हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत, कनिष्क पब्लिशर्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2006